डिफेंस कॉरिडोर में 16 हजार करोड़ का निवेश करेंगी कंपनियां

राजनाथ सिंह ने कहा- अब तक 109 कंपनियों के साथ हुआ एमओयू

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यूपी में डिफेंस कॉरिडोर में रक्षा उत्पाद बनाने वाली कंपनियां 16000 करोड़ रुपये का निवेश करेंगीं। इसके लिए अब तक 109 एमओयू हुए हैं, करीब 95 फीसदी जमीन का अधिग्रहण भी हो चुका है। सरकार का लक्ष्य है कि देश का सशस्त्र बल किसी भी तरह विदेशी उपकरणों पर निर्भर न रहे। वे शनिवार को मध्य कमान के सूर्या ऑडिटोरियम में हुए डिफेंस डायलॉग कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि यूपी में डिफेंस कॉरिडोर पर मिशन मोड में काम चालू है। 36 उद्योगों के लिए 600 हेक्टेयर जमीन आवंटित की जा चुकी है। अब तक 2500 करोड़ का निवेश भी किया जा चुका है। कॉरिडोर न सिर्फ स्पेयर पार्ट्स का उत्पादन करेगा, बल्कि ड्रोन, मानव रहित विमान, इलेक्ट्रॉनिक युद्धकला, विमान और ब्रह्मोस मिसाइलों का निर्माण भी करेगा। कहा, वित्तीय वर्ष 2022-23 में एक लाख करोड़ से अधिक का रक्षा उत्पादन और लगभग 16,000 करोड़ का निर्यात हुआ है। यूपी डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के मुख्य नोडल अधिकारी एयर चीफ मार्शल (सेवानिवृत्त) आरकेएस भदौरिया भी मौजूद रहे।

मध्य कमान के सूर्या ऑडिटोरियम में हुए डिफेंस डायलॉग कार्यक्रम का उद्घाटन करते रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और मध्य कमान के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि। -संवाद

भारतीय सेना को भी चाहिए स्टारलिंक जैसी तकनीक

मध्य कमान के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने कहा कि युद्ध के तौर-तरीके तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे में भारतीय सेना को भी यूएस आर्मी को मिल रही स्टारलिंक जैसी आईएसआर तकनीक की जरूरत है। यह दुश्मन की सटीक पहचान कर सैन्य रणनीति बनाने और प्रभावी फैसले लेने में सेना की मदद कर सकता है। इसके लिए अत्याधुनिक तकनीक, शोध, नवाचार को न्यूनतम समय में पूरा किया जाए। इस काम को सेना अकेले नहीं कर सकती। ऐसे में निजी क्षेत्र का भी इसमें सहयोग जरूरी है।

अमेठी में बनी एके-203 दुनिया में छाई

रूस की तकनीक पर अमेठी के कोरवा में बनी देशी एके-203 दुनिया की सबसे ख्याति प्राप्त राइफल बन चुकी है। अब तक करीब 30 लाख राइफल की खरीद की मांग भारतीय अर्धसैनिक बलों के अलावा दक्षिणपूर्व और अफ्रीकी देशों से हुई है। सिर्फ चार साल में इस राइफल को यह मुकाम हासिल हो चुका है। इस परियोजना के निदेशक मेजर जनरल एके सेंगर ने बताया कि 1991 में बनी एके-103 राइफल से यह सटीक और अधिक मारक क्षमता वाली है। इसकी मारक क्षमता 800 मीटर है। सिर्फ 32 महीने में हमने इसे पूरी तरह भारतीय बनाने में सफलता पाई है। उन्होंने बताया कि अब तक पांच लाख से अधिक राइफल यहां बनाई जा चुकी है।